International Journal of Multidisciplinary Education and Research
ISSN: 2455-4588
Impact Factor: RJIF 5.12
www.educationjournal.in
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 79-83

किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

'[1] विवेक कुमार सिंह, [2] डॉ० डी०एस० सिंह बघेल

[1] शोध छात्र शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

[2] आचार्य एवं विभागाध्यक्ष शिक्षा, लाइफ लांग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन पर आधारित है। बौद्धिक क्षमता का विकास भी किशोरों के व्यवहार से प्रदर्शित होता है। उनमें तथ्यों पर आधारित सोच–समझ व तर्कशील निर्णय लेने की क्षमता उत्पन्न होती है। ये सभी करण उनमें आत्मनुभूति को विकास करते है। किशोरावस्था मानसिक, भौतिक और भावनात्मक परिपक्वता के विकास की भी अवस्था है। शोध क्षेत्र में शोध क्षेत्र में अध्ययनरत किशोरावस्था के विद्यार्थियों में अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का सीधा सम्बन्ध है और छात्र व छात्राओं में शैक्षिक तनाव पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

मूल शब्द : सतना जिला, विद्यार्थी, शैक्षिक उपलब्धि, अभिभावक अभिप्रेरणा एवं प्रभाव।

1. प्रस्तावना

शिक्षा विकास की जननी है। शिक्षा के द्वारा अर्जित ज्ञान व्यक्ति को प्रकृति द्वारा दिये गये ऐसे उपहारों से परिचित कराता है जो कुछ समय पूर्व तक उसे विदित नही थे। इस नवीन तथ्यात्मक जानकारी को प्राप्त करके व्यक्ति अपनी सुविधा तथा उपयोग की नवीन जानकारी एकत्र करता है। नित ज्ञात हुई वैज्ञानिक तथा तकनीकी खोजों के कारण मनुष्य की जीवन शैली में परिवर्तन आ रहे है। इसके अतिरिक्त अनेक सामाजिक एवं भौगोलिक बदलते कारक भी उसे परिवर्तित होने के लिए विवश कर रहे है।

शिक्षा ही एक मात्र ऐसा साधन है जो मनुष्य की जन्मजात पाश्विक प्रवृत्तियों का शोधन करती है, मानव व्यवहार में परिवर्तन लाती है, उसे जीवन की कला प्रदान करती है तथा मनुष्य को एक सामाजिक प्राणी बनाती है। इस प्रकार शिक्षा मानव विकास हेतु परमावश्यक सिद्ध हुई है।

किशोरावस्था शिक्षा कार्यक्रम एक महत्वपूर्ण पहल है जिसका उद्देश्य युवाओं को वास्तविक जीवन परिस्थितियों में सकारात्मक और उत्तरदायी ढंग से प्रतिक्रिया देने के लिए सटीक, आयु उपयुक्त तथा सांस्कृतिक दृष्टि से संबंधित सूचना, स्वस्थ मनोवृत्ति तथा कौशल विकसित करने में सक्षम बनाकर उन्हें सशक्त बनाना है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एन.सी.ई.आर.टी) कार्यक्रम का समन्वय करती है। राष्ट्रीय लोकप्रिय शिक्षा कार्यक्रम (एन.पी.ई.पी.) 30 राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों में लागू किया जा रहा है। इसका उद्देश्य छात्रों और अध्यापकों के बीच उत्तरदायी व्यवहार से संबंधित विकास मामलों तथा जनसाधारण मुख्यतः अभिभावकों और समुदायों के बीच परोक्ष रूप से सकारात्मक मनोवृत्ति तथा जागरुकता विकसित करना है। उत्तरदायी व्यवहार हेतु सकारात्मक मनोवृत्ति उत्पन्न करना तथा उपयुक्त जीवन कौशल विकसित करना भी एन.पी.ई.पी. के उद्देश्य है।

किशोरावस्था शिक्षा विद्यार्थियों के किशोरावस्था के बारे में जानकारी प्रदान करने की आवश्यकता के सन्दर्भ में उभरी एक नवीन शिक्षा का नाम है। किशोरावस्था जो कि बचपन और युवावस्था के बीच का परिवर्तन काल है, को मानवीय जीवन की एक पृथक अवस्था के रूप में मान्यता केवल बीसवीं शताब्दी के अंत में ही मिला पायी। हजारों सालों तक मानव विकास की केवल तीन अवस्थाएं – बचपन, युवावस्था और बुढ़ापा ही मानी जाती रही है। कृषि प्रधान व ग्रामीण संस्कृति वाले भारतीय व अन्य समाजों में यह धारण है कि व्यक्ति बचपन से सीधा प्रौढ़ावस्था में प्रवेश करता है। अभी तक बच्चों को छोटी आयु में ही प्रौढ़ व्यक्तियों के उत्तरदायित्व को समझने और वहां करने पर बाध्य किया जाता रहा है। युवक पौढ़ पुरुषों के कामकाज में हाथ बंटाते रहे हैं और लड़कियां घर के। बाल विवाह की कुप्रथा तो बच्चों को यथाशीघ्र प्रौढ़ भूमिका में धकेल देती रही है। विवाह से पूर्व या विवाह होते ही बच्चों को यह जाने पर बाध्य किया जाता रहा है कि वे प्रौढ़ हो गए हैं। लेकिन अब कई नवीन सामाजिक और आर्थिक धारणाओं की वजह से स्थिति में काफी परिवर्तन आ गया है।

शिक्षा और रोजगार के बढ़ते हुए अवसरों के कारण विवाह करने की आयु भी बढ़ गयी है। ज्यादा से ज्यादा बच्चे घरों और कस्बों से बाहर निकल कर प्राथमिक स्तर से आगे शिक्षा प्राप्त करते है। उनमें से अधिकतर शिक्षा व रोजगार की खोज में शहरों की ओर पलायन कर जाते हैं। देश के अधिकतर भागों में बाल विवाह की घटनाएँ न्यूनतम स्तर पर पहुंच गयी है। लड़कियां भी बड़ी संख्या में शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। जिसके फलस्वरूप वे भी शीघ्र ही वैवाहिक बांधन में बंधन नहीं चाहतीं। इस मानसिक परिवर्तन में संचार माध्यमों की भी महती भूमिका रही है। एक ओर विवाह की आयु में वृद्धि हो गयी और दूसरी ओर बच्चों में बेहतर स्वास्थ्य और पोषण सुविधाओं के कारण यौवनारम्भ निर्धारित आयु से पहले ही हो जाता है। इन परिवर्तनों के कारण बचपन और प्रौढावस्था में काफी अंतर पड़ गया है। इस कारण अब व्यक्ति की आयु में एक ऐसी लम्बी अवधि आती है जब उसे न तो बच्चा समझा जाता है और न ही प्रौढ़ का दर्जा दिया जाता है। जीवन के इसी काल को किशोरावस्था कहते है।

किशोरावस्था शब्द अंग्रेजी भाषा के Adolescence शब्द का हिन्दी पर्याय है। Adolescence शब्द का उदभव लेटिन भाषा से माना गया है जिसका सामान्य अर्थ है बढ़ाना या विकसित होना। बाल्यावस्था से प्रौढ़ावस्था तक के महत्वपूर्ण परिवर्तनों जैसे शारीरिक, मानसिक एवं बल्पबौधिक परिवर्तनों की अवस्था

किशोरावस्था है। वस्तुतः किशोरावस्था यौवनारम्भ से परिपक्कता तक वृद्धि एवं विकास का काल है। 10 वर्ष की आयु से 19 वर्ष तक की आयु के इस काल में शारीरिक तथा भावनात्मक स्वरूप से अत्यधिक महत्वपूर्ण परिवर्तन आते हैं। कुछ मनोवैज्ञानिक इसे 13 से 18 वर्ष के बीच की अवधि मानते हैं, जबकि कुछ की यह धारणा है कि यह अवस्था 24 वर्ष तक रहती है। लेकिन किशोरावस्था को निश्चित अवधि की सीमा में नहीं बांधा जा सकता। यह अवधि तीव्र ग्रति से होने वाले शारीरिक परिविर्तनों विशेषतया यौन विकास से प्रारंभ होकर प्रजनन परिपक्वता तक की अवधि है। विश्व स्वस्थ्य संगठन के अनुसार यह गौण यौन लक्षणों (यौवनारम्भ) के प्रकट होन से लेकर यौन एवं प्रजनन परिपक्वता की ओर अग्रसर होने का समय है जब व्यक्ति मानसिक रूप से लेकर यौन एवं प्रजनन परिपक्वता की ओर अग्रसर होने का समय है जब व्यक्ति मानसिक रूप से प्रौढ़ता की ओर अग्रसर होता है और वह सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से अपेक्षाकृत आत्मनिर्भर हो जाता है जिससे समाज में अपनी एक अलग पहचान बनती है।

2. अध्ययन की आवश्यकता

किशोरों में सामाजिक–सांस्कृतिक मेलजोल के फलस्वरूप कुछ और परिवर्तन भी आते हैं। सामान्यतः समाज किशोरों की भूमिका को निश्चित रूप में परिभाषित नहीं करता। फलस्वरूप किशोरा बाल्यावस्था और प्रौढ़ावस्था के मध्य अपने को असमंजस की स्थिति में पाते हैं। उनकी मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं को समाज द्वारा महत्व नहीं दिया जाता, इसी कारण उनमें क्रोध, तनाव एवं व्यग्रता की प्रवृत्तिया उत्पन्न होती है। किशोरावस्था में अन्य अवस्थाओं की अपेक्षा उत्तेतना एवं भावनात्मकता अधिक प्रबल होती है। अध्ययन क्षेत्र में किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन की समीक्षा की जाएगी, वहीं दूसरी ओर इसमें आने वाली कठिनाइयों की जानकारी प्राप्त की जाएगी तथा इन्हें सशक्त बनाने के लिए अपने शोध कार्य में वास्तविक स्थिति का विश्लेषण कर सशक्त प्रभावी सुझाव प्रस्तुत कर सकेगा जिनका उपयोग न केवल शोध क्षेत्र में अपितु सम्पूर्ण देश में शिक्षा के विकास हेतु किया जा सकेगा।

3. शोध की परिकल्पनाएँ

1. शोध क्षेत्र के छात्र व छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

4. उद्देश्य

अतः प्रत्येक क्रिया का कुछ उद्देश्य अवश्य होता है बिना उद्देश्य के विभिन्न प्रकार कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर शोध कार्य किया जाता है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में निम्नलिखित उद्देश्य है –

- किशोरावस्था के विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा के प्रभाव को ज्ञात करना।
- शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकों की जानकारी प्राप्त करना।
- शैक्षिक उपलब्धि में आने वाली समस्याएँ व अवरोधों का पता लगाना।

5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तावित शोध कार्य का क्षेत्र सतना जिला है। इसके अन्तर्गत 8 विकासखण्ड – सतना (सोहावल), मझगवाँ, रामपुर बघेलान, नागौद, उचेहरा, अमरपाटन, रामनगर एवं मैंहर है। अतः जिला अन्तर्गत स्थित माध्यमिक शिक्षा स्तर पर किशोरावस्था में विद्यार्थियों में अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन किया गया।

6. अध्ययन विधि

साख्यिकीय विधि : सर्वेक्षण तथा साक्षात्कार विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विष्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– Mean, प्रतिशत (%), S.D., Chisquare test, 't' Test आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विष्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

7. शोध उपकरण

शोधार्थी ने किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन के सम्बन्ध में छात्र–छात्राओं से जानकारी प्राप्त करने हेतु उपलब्धि परीक्षण पत्रक का प्रयोग किया है।

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने तथा कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से गुप्ता, एस.पी. तथा गुप्ता, अल्का (2008)[1], अग्रवाल, रीना (2007)[2], चौबे, एस.पी. (2003)[3], झा, शीतला एवं दुबे शैलजा (2016)[4], सिंह, शिव प्रकाश (2007)[5] एवं पाण्डेय, जितेन्द्र कुमार (2007)[6], पाठक, पी.डी. (2007)[7] एवं कपिल, एच.के. (1996)[8] ने शोध विधि एवं विज्ञान विषय से सम्बन्धित कार्य किये है।

समष्टि व प्रतिदर्श : किशोरावस्था में विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित प्रत्येक विद्यालय से 10 छात्र एवं 10 छात्राएं कुल 800 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार हेतु किया गया है। इस प्रकार यह अध्ययन दोनों दृष्टियों से सैद्धान्तिक एवं अनुभवाश्रित परिपूर्ण होगा।

9. सतना जिले का सामान्य परिचय

सतना जिला भारत के मानचित्र में 23.58º-25.12º उत्तरी अक्षांश तथा 80.12º-81.23º पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल 7424 वर्ग कि.मी. है जो प्रदेश के क्षेत्रफल का 1. 78 प्रतिशत है। सतना मध्य रेल्वे के इलाहाबाद और कटनी जंक्शन के बीच एक प्रमुख रेल्वे स्टेशन एवं व्यापारिक, औद्योगिक नगर है। जिले में एक नगर निगम (सतना), एक नगरपालिका (मैहर) के अतिरिक्त 9 नगर पंचायते क्रमषः नागौद, अमरपाटन, रामपुर बघेलान, कोठी, जैतवारा, कोटर, विरसिंहपुर, उचेहरा एवं चित्रकूट हैं।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्र. 1

"शोध क्षेत्र के छात्र व छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"

सारणी क्रमांक – 1 : शोध क्षेत्र के छात्र व छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

क्र.	प्राप्तांक की स्थिति	शोध क्षेत्र के छात्र व छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन			
		छात्र		छात्राएँ	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	0 अंक से ऊपर किन्तु 40 अंक से कम (अधिगम स्तर की प्राप्ति नहीं)	89	22.25	75	18.75
2.	40 अंक से अधिक किन्तु 60 अंक से कम (न्यूनतम अधिगम स्तर की प्राप्ति)	214	53.50	189	47.25
3.	60 अंक से अधिक किन्तु 80 अंक से कम (दक्षता की ओर अग्रसर)	77	19.25	105	26.25
4.	80 अंक से अधिक किन्तु 100 अंक से कम (दक्षता की प्राप्ति)	20	5.00	31	7.75

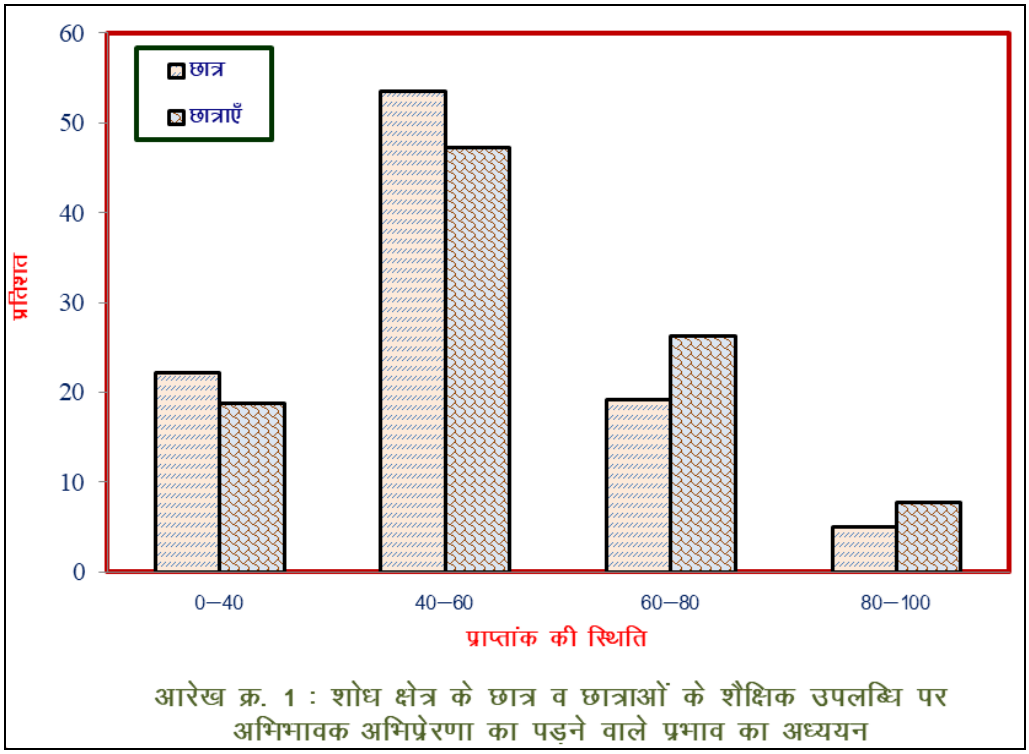

आरेख क्र. 1 : शोध क्षेत्र के छात्र व छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 में न्यादर्श हेतु चयनित माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत 400 छात्र व 400 छात्राओं में शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन से संबंधित अधिगम स्तर की जानकारी का संकलन किया गया है।

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 1 के ऑकड़े यह दर्शाते है कि, शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर न्यादर्श हेतु चयनित कुल 800 छात्र/छात्राओं में से 89 छात्र एवं 75 छात्राएं न्यूनतम अधिगम स्तर की प्राप्ति नहीं कर पाएँ तथा 214 छात्र एवं 189 छात्राओं ने न्यूनतम अधिगम स्तर की प्राप्ति की। इसी प्रकार से 77 छात्र तथा 105 छात्राएँ दक्षता की ओर अग्रसर है, जबकि 20 छात्र एवं 31 छात्राओं ने दक्षता को प्राप्त कर लिया है।

इस प्रकार इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र 22.25 प्रतिशत एवं 18.75 प्रतिशत छात्राएँ न्यूनतम अधिगम स्तर को प्राप्त नहीं कर सके तथा 53.50 प्रतिशत छात्र, 47.25 प्रतिशत छात्राओं ने न्यूनतम अधिगम स्तर की प्राप्ति की है, इसी प्रकार 19.25 प्रतिशत छात्र एवं 26.25 प्रतिशत छात्राएँ दक्षता की ओर अग्रसर है, जबकि 5.00 प्रतिशत छात्र एवं 7.75 प्रतिशत छात्राओं ने दक्षता की प्राप्ति कर ली है।

सारणी 2 : सार्थकता हेतु सारणी

समूह	छात्रों की संख्या	सामान्तर माध्य	मानक विचलन	अनुपात
छात्र	400	51.68	15.77	–3.11
छात्राएँ	400	55.20	16.29	

$d.f = (N_1-1) + (N_2-1)$
$= (400-1) + (400-1)$
$= 399 + 399$
$= 798$

विश्लेषण

उपरोक्त सारणी एवं सांख्यिकीय विश्लेषण में शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत छात्र व छात्राओं में शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है। सांख्यिकी विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के छात्रों में अधिगम स्तर सम्बन्धी औसत उपलब्धि 51.68 तथा मानक विचलन 15.77 है। छात्राओं में अधिगम स्तर औसत उपलब्धि 55.20 तथा मानक विचलन 16.29 है।

शोध क्षेत्र के छात्र व छात्राओं में शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन सार्थकता सारणी में किया गया है। दोनों समूहों की औसत उपलब्धियों में अंतर की गणना 't' परीक्षण के द्वारा की गई है। गणना से प्राप्त 't' का मान –3.11 है।

व्याख्या

7.98 df. पर सार्थकता के लिए ' t ' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 एवं 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि गणना से प्राप्त ' t ' का मान –3.11 है जो कि दोनों विश्वास स्तरों पर मानक मानों से कम है।

सारणी एवं सांख्यिकीय विश्लेषण से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि शोध क्षेत्र के छात्र व छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

सारणी – 3 : शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

क्र.	प्राप्तांक की स्थिति	शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन			
		ग्रामीण		शहरी	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	0 अंक से ऊपर किन्तु 40 अंक से कम (अधिगम स्तर की प्राप्ति नहीं)	73	18.25	32	8.00
2.	40 अंक से अधिक किन्तु 60 अंक से कम (न्यूनतम अधिगम स्तर की प्राप्ति)	223	55.75	219	54.75
3.	60 अंक से अधिक किन्तु 80 अंक से कम (दक्षता की ओर अग्रसर)	80	20.00	120	30.00
4.	80 अंक से अधिक किन्तु 100 अंक से कम (दक्षता की प्राप्ति)	24	6.00	29	7.25

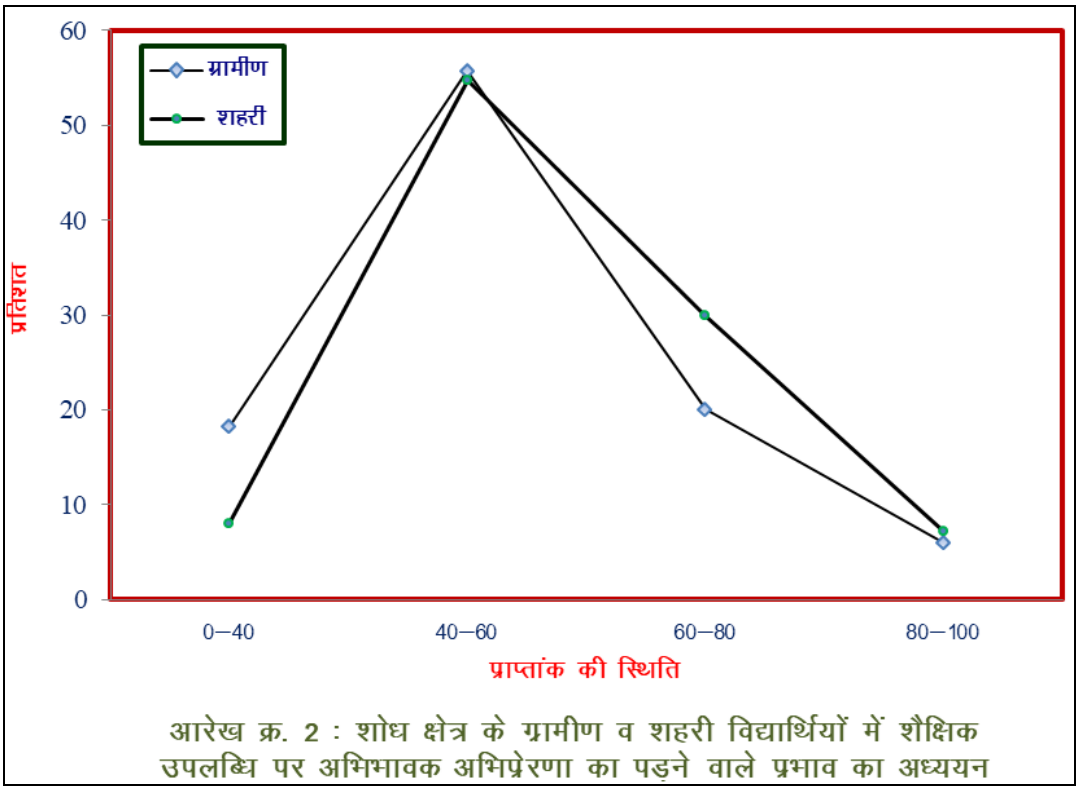

आरेख क्र. 2 : शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

आकृति 2

विश्लेषण एवं व्याख्या

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 3 में न्यादर्श हेतु चयनित माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत 400 ग्रामीण व 400 शहरी विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन से संबंधित अधिगम स्तर की जानकारी का संकलन किया गया है।

उपरोक्त सारणी क्रमांक – 3 के ऑकड़े यह दर्शाते है कि, शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर न्यादर्श हेतु चयनित कुल 800 विद्यार्थियों में से 73 ग्रामीण एवं 32 शहरी विद्यार्थियों ने न्यूनतम अधिगम स्तर की प्राप्ति नहीं कर पाएँ तथा 223 ग्रामीण एवं 219 शहरी

विद्यार्थियों ने न्यूनतम अधिगम स्तर की प्राप्ति की। इसी प्रकार से 80 ग्रामीण तथा 120 शहरी विद्यार्थियों ने दक्षता की ओर अग्रसर है, जबकि 24 ग्रामीण एवं 29 शहरी विद्यार्थियों ने ने दक्षता को प्राप्त कर लिया है।

इस प्रकार इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है, कि शोध क्षेत्र में माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण 18.25 प्रतिशत एवं 8.00 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों ने न्यूनतम अधिगम स्तर को प्राप्त नहीं कर सके तथा 55.75 प्रतिशत ग्रामीण, 54.75 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों ने न्यूनतम अधिगम स्तर की प्राप्ति की है, इसी प्रकार 20.00 प्रतिशत ग्रामीण एवं 30.00 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों ने दक्षता की ओर अग्रसर है, जबकि 6.00 प्रतिशत ग्रामीण एवं 7.25 प्रतिशत शहरी विद्यार्थियों ने दक्षता की प्राप्ति कर ली है।

सारणी 4: सार्थकता हेतु सारणी

समूह	विद्यार्थियों की संख्या	सामान्तर माध्य	मानक विचलन	अनुपात
ग्रामीण	400	53.13	15.30	−3.99
शहरी	400	57.30	14.24	

$df = (N_1-1) + (N_2-1)$
$= (400-1) + (400-1)$
$= 399 + 399$
$= 798$

विश्लेषण

उपरोक्त सारणी एवं सांख्यिकीय विश्लेषण में शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का सांख्यिकीय विश्लेषण किया गया है। सांख्यिकी विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र के ग्रामीण विद्यार्थियों में अधिगम स्तर सम्बन्धी औसत उपलब्धि 53.13 तथा मानक विचलन 15.30 है। शहरी विद्यार्थियों में अधिगम स्तर औसत उपलब्धि 57.30 तथा मानक विचलन 14.24 है।

शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन सार्थकता सारणी में किया गया है। दोनों समूहों की औसत उपलब्धियों में अंतर की गणना 't' परीक्षण के द्वारा की गई है। गणना से प्राप्त 't' का मान −3.99 है।

व्याख्या

7.98 df. पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 एवं 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि गणना से प्राप्त 't' का मान −3.99 है जो कि दोनों विश्वास स्तरों पर मानक मानों से कम है।

सारणी एवं सांख्यिकीय विश्लेषण से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

11. निष्कर्ष

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि शोध क्षेत्र के छात्र व छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नहीं है और शोध क्षेत्र के ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव में कोई सार्थक अन्तर नही है।

12. सन्दर्भ ग्रंथ

1. गुप्ता, एस.पी. तथा गुप्ता, अल्का – उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, इलाहाबाद : शारदा पुस्तक भवन, 2008.
2. अग्रवाल, रीना – परिषदीय प्राथमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक सम्प्राप्ति : एक अवलोकन, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 2007, वर्ष 26, अंक 21.
3. चौबे, एस.पी. – हिस्ट्री ऑफ इंडियन एजुकेशन, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2, 2003.
4. झा, शीतला एवं दुबे शैलजा – मध्याह्न भोजन कार्यक्रम व स्व सहायता समूह के कार्य निष्पादन पर शिक्षकों के दृष्टिकोण का अध्ययन, Research Expo International Multidisciplinary Research Journal, 2016; Vol. VI, Issue – I, pp.59-64.
5. सिंह, शिव प्रकाश – भारत में 'सभी के लिये शिक्षा' अभियानः मिथक या वास्तविकता, प्रतियोगिता दर्पण, मासिक पत्रिका प्रकाशक एवं मुद्रक महेन्द्र जैन, 2007; आगरा, पृ0 1878–1879।
6. पाण्डेय, जितेन्द्र कुमार – भारत में आधुनिक शिक्षा का प्रसार : दशा और दिशा, कुरुक्षेत्र मासिक पत्रिका, ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, 2007, वर्ष 53, अंक 11, पृ. 7–9.
7. पाठक, पी.डी – भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें इक्कीसवाँ संस्करण, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा 2007.
8. कपिल, एच.के. – सांख्यिकी के मूल तत्व, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा, 1996.